"कामायनी" में विश्वमानवतावाद

- डॉ. गीता यादव,

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

एस एम आर के महिला महाविद्यालय,

नाशिक-४२२००५

निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं| कामायनी की रचना उन्होंने १९३६ ई. में की जो छायावाद के प्रगतिवाद में प्रवसन का काल है| यह स्वाभाविक ही है कि इस कविता में छायावाद की कई विशेषतायें दिखाई देती हैं| कोई भी महान रचना अपने देशकाल से बंधना पसंद नहीं करती| उसकी कोशिश होती है कि वह अपने देशकाल का अतिक्रमण करके हर देश और हर काल के संदर्भ में सार्थक हो उठे| इसलिए महान रचनाकार अपने युग की समस्याओं को स्थूल वर्णनों के साथ नहीं उठाता, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रश्नों के साथ उठाता है ताकि देशकाल के बदलने से रचना नए नए संदर्भों में अपनी अर्थवत्ता सिध्द करे| निराला ने इसी उद्देश्य के लिए कविता की रचना पौराणिक या मिथकीय ढाँचे के भीतर की है क्योंकि मिथक किसी देशकाल से मुक्त होकर पाठक तक रचनाकार की संवेदना पहुँचाने में समर्थ होता है|

कामायनी में अभिव्यक्त का मूल सन्देश "आनंदवाद" है| आनंद ही विश्व शांति और सुरक्षा के लिए उचित पर्याय है| कामायनी में आनंदवाद की अभिव्यक्ति 'विश्वमानवतावाद' से सम्बध्द है| इसे द्वैवाताद्वैत अथवा प्रतिभिज्ञादर्शन भी कहते हैं| वस्तुत: यह शैव तथा वेदांत दर्शन का समिश्रण है| जिसे 'शैवागम सम्प्रदाय' पर आधारित है| जिसके अनुसार यह जगत ब्रहमा या

महाचिति की ही अभिव्यक्ति है| यह शंकराचार्य के समान जगत को 'ब्रह्मा का विवर्त' या 'मिथ्या' कहकर परिभाषित नहीं करता अपितु जगत और महाचिति में अभेद मानता है| इसके अनुसार जगत महाचिति का कार्य नहीं है बल्कि उसकी अभिव्यक्ति ही है| चूँकि महाचिति लीलामय व मंगलमय है, इसलिए जगत भी मंगलम है और इसके प्रति अनुराग होना स्वाभाविक है|

"कर रही लीलामय आनंन्द, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त ,
विश्व का उन्मीलन अभिराम, इसी में सब होते अनुरक्त|"

उपर्युक्त पंक्तिनुसार मनुष्य की मूल समस्या विषमता है जिसका तात्पर्य है- इच्छा क्रिया तथा ज्ञान में समन्वय का अभाव| जब व्यक्ति विषमता की स्थिति में होता है तो उसका जीवन दुखों से भरा होता है| उदहारण के लिए-

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हैं, इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सकें, यह विडम्बना है जीवन की|"

संसार में विश्वमानवतावाद की स्थिति में मुक्त होकर मनुष्य को जिस स्थिति में पहुँचाना है वह 'समरसता' की है| यह वह स्थिति है जहाँ इच्छा, क्रिया और ज्ञान समन्वय की स्थिति में होते हैं और आनंद की उपलब्धि होती है| कामायनी के अंत में समरसता और आनंद की स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है|

"समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था|
चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था"

विषमता से समरसता की इस यात्रा को शैवाद्वैतवाद में पांच कोशों तथा तीन स्थितियों के माध्यम से व्याख्यायित किया गया है| पांच कोष हैं- अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमाय तथा आनंदमय| यह कल्पना उपनिशिसदों से ही ली गई है| कामायनी मन चिंता से ईर्ष्या तक मनु

मनोमय कोश में स्थित जीव का प्रतीक है, इडा सर्ग विज्ञानमय कोश का प्रतीक है जबकि अंतिम सर्ग 'आनंद' आनंदमय कोश का प्रतीक है|

इसी प्रकार शैवाद्वैत में तीन स्थितियों की भी चर्चा की गई है- (१) आणव स्थिति, जहाँ अभेध बुध्दी की प्रधानता है| कामायनी में देखें तो निर्वेद सर्ग तक मनु आणव स्थिति में है, निर्वेद से रहस्य सर्ग तक शाश्वत स्थिति दिखाई पड़ती है जबकि आनंद सर्ग में संभाव्य स्थिति व्यक्त हुई है| आनन्द सर्ग चरम उपलब्धि का सर्ग जहाँ समरसता, आनंदमयी कोश तथा समभाव्य स्थिति तीनों साकार हुये हैं|

कामायनी में आनंदवाद के अतिरिक्त भी कई दर्शनों का प्रभाव दिखता है| इनमें से कुछ दर्शन प्राचीन हैं तो कुछ नवीन| जो नवीन दर्शन हैं उनमें गांधीवाद जैसे भारतीय दर्शन भी हैं और डार्विन, मार्क्स, फ्रायड आदि विचारकों के पश्चिमी दर्शन भी| कामायनी प्रतीकात्मक काव्य है जिसमें प्रस्तुत कथा के समांनांतर अप्रस्तुत कथा भी लगातार चलती रहती है| प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से न मानव मन तथा मानवता के विकास की यात्रा का क्रमिक चित्र प्रस्तुत किया है| जहाँ तक मानव मन का प्रश्न है, प्रसाद ने स्वयं रचना के आमुख में इस तथ्य को स्वीकार किया है कि 'मनु अर्थात मन के दोनों पक्ष- हृदय व मस्तिष्क का संबंध क्रमश: श्रध्दा व इडा से भी सरलता से लग जाता है|'

कामायनी के सभी सर्ग मानव मन की विकास यात्रा को ही प्रस्तुत करते हैं| सबसे पहले मनु अर्थात मन 'चिंता' की स्थिति में है क्योंकि मानव-मन निराशा व आशा के द्वंद्व से ही संचरित हुआ है| आशा के बाद धीरे-धीरे 'श्रध्दा' व आस्था जैसे भाव उत्पन्न होते हैं, जिन्हें श्रध्दा सर्ग में प्रस्तुत किया गया है| मनुष्य की बाल्यावस्था में श्रध्दा जैसे भाव स्वभावत: उत्पन्न होते हैं| इन भावों से मुक्त होकर मनुष्य बाहरी जीवन में उपलब्धियाँ अर्जित करना चाहता है| अब उसकी

अधिकार भावना बढ़ती जाती है और वह श्रध्दा जैसे भावों से वंचित होकर अति बौध्दिकता व तार्किकता को महत्व देने लगता है| 'कर्म' 'ईर्ष्या' तथा 'इडा' सर्गों में मन की यही विकास यात्रा प्रस्तुत हुई है| किन्तु मन की अबाधित अधिकार भावना हर वस्तु को नियंत्रित कर लेना चाहती है जिसके परिणामस्वरूप उसे कठोर संघर्षो में पराजय झेलनी पड़ती है| 'संघर्ष' व 'निर्वेद' सर्गों में यही भाव व्यक्त हुआ है|

कामायनी की प्रतीकात्मकता का दूसरा स्तर मानव-इतिहास के स्तर पर भी खुलता है| मानव मन का सम्पूर्ण इतिहास 'चिंता' से ही शुरू होता है क्योंकि जब मानव सोचने समझने की शक्ति से मुक्त हुआ होगा तो जीवन में व्याप्त असुरक्षाओं ने उसे सचमुच चिंतित किया होगा| इसके बाद मनुष्य ने धीरे-धीरे प्रकृति के रहक्यों को समझते हुए 'आशा' महसूस की होगी| इसके तुरंत बाद वह समय आया होगा जब उसने धर्म व ईश्वर जैसी धारणायें बनाई होंगी और उनके प्रति 'श्रध्दा' से भर उठा होगा|" 'काम' व "वासना" उसकी सहज प्रवृत्तियाँ थीं, किन्तु सामाजिक संरचनाओं के विकास की प्रक्रिया में 'लज्जा' जैसे भाव भी उसके जीवन का अंग बने होंगे| यहाँ तक मनुष्य खाद्य संग्राहक व आखेट व्यवस्था के दौर में था| जैसे-जैसे कृषि उत्पादन प्रणाली शुरू हुई होगी और उत्पादकता बढ़ी होगी| सम्पूर्ण प्रकृति पर अपना अधिकार जताने की इच्छा उसे बौध्दिकारण व तार्किकरण की और ले गयी होगी, जिसका स्वाभाविक परिणाम था- वैज्ञानिक क्रांति तथा पूंजीवाद का उद्भव| पूंजीवाद सभ्यता में उदार लोकतंत्र जैसी राजनीतिक संरचनाये विकसित हुई| पूंजीवाद ने सुविधायें तो एकत्रित कर दी किन्तु मनुष्य की भूख निरंतर बढ़ती गई, जिसके परिणाम स्वरुप 'संघर्ष' होना स्वाभाविक था| प्रत्येक व्यक्ति भौतिकता की इसी अंधी दौड़ में दौड़ता रहा और अंततः विरोधी शक्तियों से पराजित हुआ क्योंकि तार्किकता पर किसी व्यक्ति विशेष का प्रभुत्व स्थापित नहीं होता| जो बुध्दी आज किसी के पक्ष में है, वह कल किसी और के

पक्ष में हो सकती है" पूंजीवाद की यह अंधी दौड़ मनुष्य को अंतत: निराशा की उसी भाव-भूमि पर ले जाती है जहाँ से उसने वस्तुओं तथा भौतिक सुखों के संग्रह की कोशिश की थी| अब उसे समझ में आता है कि वास्तविक आनंद वस्तुओं के संग्रह में नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार में है, परमतत्व के रूप में सबको पहचान लेने में है| यहाँ पुन: श्रध्दामूलक दृष्टी का विकास होता है और यही दृष्टिकोण उसे सुख-दु:ख के द्वैत से परे वास्तविक आनंद की स्थति में ले जाता है|

अस्तु कह सकते हैं कि कामायनी प्रतीकात्मक स्तर पर मानव-मन तथा मानवता के इतिहास की ही कथा है जिसे प्रसाद ने बहुत खूबसूरती से काव्य के तत्वों में गूँथ दिया है| अत: कामायनी में विश्वमानावाताद कूट-कूटकर भरा है|

संदर्भ: १) कामायनी:जयशंकर प्रसाद :: गीता प्रकाशन : हैदराबाद

२) कामायनी पुनर्पाठ::